M.A - I SEMESTER CC-IV 01

शौरसेनी आगम साहित्य

इकाई - 2. शौरसेनी टीका साहित्य

Q. शौरसेनी टीका साहित्य मे धवल टीका छक्खण्डागम (षट्खण्डागम) - का परिचय एवं विशेषताएँ का विवेचन करें।

धवल टीका

Ans — छक्खण्डागम (षट्खण्डागम) - यह शौरसेनी आगम ग्रन्थ का महत्वपूर्ण टीका है। इस टीका के रचयिता आचार्य वीरसेन हैं, इनके गुरु का नाम आर्यनन्दि है तथा शिष्य का नाम जिनसेन। जिनसेन ने अपने गुरु वीरसेन की सर्वार्थगामिनी नैसर्गिक प्रज्ञा की बहुत श्लाघा की है। वीरसेन ने बप्पदेव गुरु की व्याख्याप्रज्ञप्ति टीका के आधार पर चूर्णियों की शैली मे 72 हजार श्लोक प्रमाण प्राकृत मिश्रित संस्कृत धवल टीका लिखी है। टीकाकार की प्रशस्ति के अनुसार यह टीका वाटग्राम पुर मे सन 116 मे समाप्त की गयी है। टीका मे आये हुए अनेक ग्रन्थों के उल्लेख से स्पष्ट है कि आचार्य वीरसेन ने दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनो ही सम्प्रदायों के विशाल साहित्य का आलोडन किया था। ये बहुश्रुत विद्वान थे। आचार्य वीरसेन ने स्थान-स्थान पर उत्तर प्रतिपत्ति और दक्षिण प्रतिपत्ति नामकी मान्यताओं का निर्देश करते हुए दक्षिण प्रतिपत्ति को ऋजु और आचार्य परम्परागत तथा उत्तर प्रतिपत्ति को अनृजु और आचार्य परम्परा के बाह्य बतलाता है।

सूत्र है ग्रन्थों के भिन्न भिन्न पक्षों का उल्लेख करते हुए शंका-समाधान के रूप मे विषय उपस्थित किया है।

OPPO A53
2021/06/18 16:09

षट्खण्डागम (षट्खण्डागम) के धवला टीका की प्रमुख विशेषताएँ हैं। जो इस प्रकार के हैं।

(1.) षट्खण्डागम के सूत्रों का मर्मोद्घाटन करने के साथ कर्म सिद्धान्त का सविस्तार निरूपण किया है।

(2) समकालीन राजाओं, पूर्ववर्ती आचार्य और ग्रन्थों का नामोल्लेख वर्तमान है।

(3) कर्म सिद्धान्त का सुस्पष्ट और विस्तृत निरूपण किया गया

(4.) प्रसंगवश दर्शनशास्त्र की अनेक मौलिक मान्यताओं का समावेश हुआ है।

(5) लोक के स्वरूप विवेचन में नये दृष्टिकोण की स्थापना है। अपने समय तक प्रचलित वर्तुलाकार लोक की प्रमाण प्ररूपण करके इस मान्यता का खण्डन, क्योंकि इस प्रक्रिया से सात रज्जु के घन प्रमाण क्षेत्र प्राप्त नहीं होता।

(6.) स्वयम्भूरमण समुद्र की बाह्य वेदिका के परे भी असंख्य योजन विस्तृत पृथिवी का अस्तित्व सिद्ध किया है।

(7) अन्तर्मुहूर्त के सम्बन्ध में नयी मान्यता - मुहूर्त से अधिक काल भी अन्तर्मुहूर्त कहा जाता है।

(8) गणित की नाना प्रवृत्तियों का प्ररूपण परिकर्मादि के गणित के साथ संकलित घन अर्द्धच्छेद, समीकरण, प्रमाण राशियों, भिन्न की मौलिक प्रक्रियाएँ, वृत्त, व्यास, चाप परिधि सम्बन्धी गणित है। गणित शास्त्र की दृष्टि से यह टीका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

(9) ज्योतिष और निमित्त सम्बन्धी प्राचीन मान्यताओं का स्पष्ट विश्लेषण तथा रौद्र, श्वेत, मैत्र, सारभट, दैत्य, वैरोचन, वैश्वदेव, अभिजित, रोहण, बल, विजय, वरुण, अर्यमन और भाग्य नामक पन्द्रह मुहूर्तों का उल्लेख वर्तमान है। इसके अतिरिक्त नक्षत्रों के नाम, ऋतु, एकाव... उपलब्ध है। ऋतु, अयन, पक्ष आदि का विवेचन भी उपलब्ध है।

(10) सम्यक्त्व के स्वरूप का विशेष विवेचन किया है। सम्यक्त्वोन्मुख जीव के परिणामों की बढ़ती हुई

OPPO A53
2021/06/18 16:09

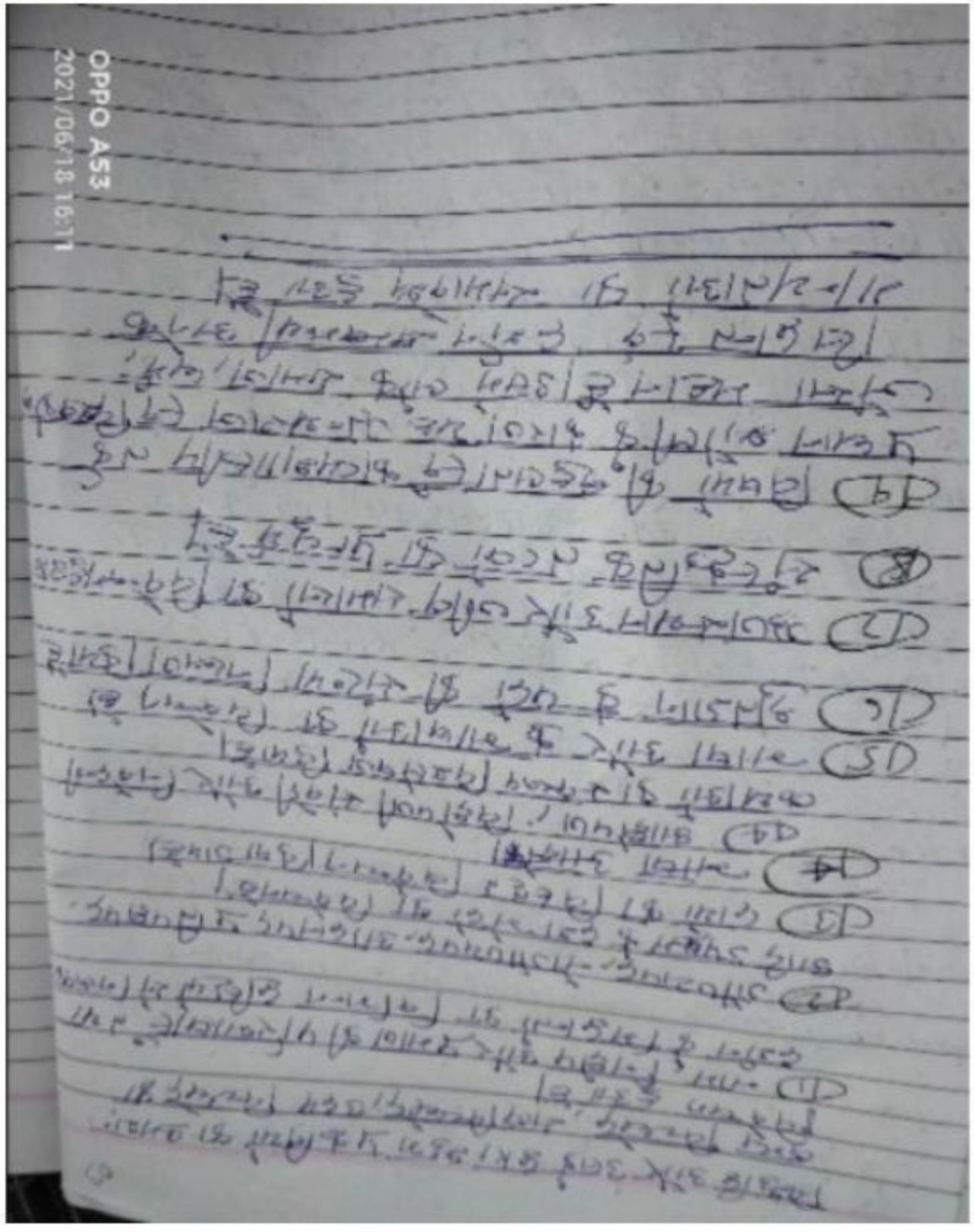

सिद्धि और उनके द्वारा अनुग प्रकृतियों का प्रमाण, कुछ विच्छेद, गलविच्छेद, उदय विच्छेद का निरूपण हुआ है।

(11) नाम, निक्षेप और प्रमाण की परिभाषाएँ तथा दर्शन के सिद्धान्तों का विभिन्न दृष्टियों से निरूपण।

(12) औपशमपद, नोऔपशमपद, औदनपद, प्रतिपक्षपद आदि उपक्रम के द्वारा भेदों का विवेचन है।

(13) दायों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

(14) भाषा आलोक।

(14) आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेगी और निर्वेदनी कथाओं का स्वरूप विश्लेषण किया है।

(15) भाषा और उसके भाषाओं का विवेचन है।

(16) श्रुतज्ञान के पदों की संख्या निरूपण किया है।

(17) अजास्थान और जीव समासों का विवेचन है।

(18) संस्कृतिक तत्वों का प्रयुक्त है।

(19) विषयों की बहुलता से काव्यशास्त्रीय तर्क प्रधान शैली के कारण यह ग्रन्थराज सर्वश्रेष्ठ जैसा स्थान है। इसमें लोक समाज, धर्म, सिद्धान्त एवं दर्शन सम्बन्धी अनेक मान्यताओं का समावेश हुआ है।

OPPO A53
2021/06/18 16:11